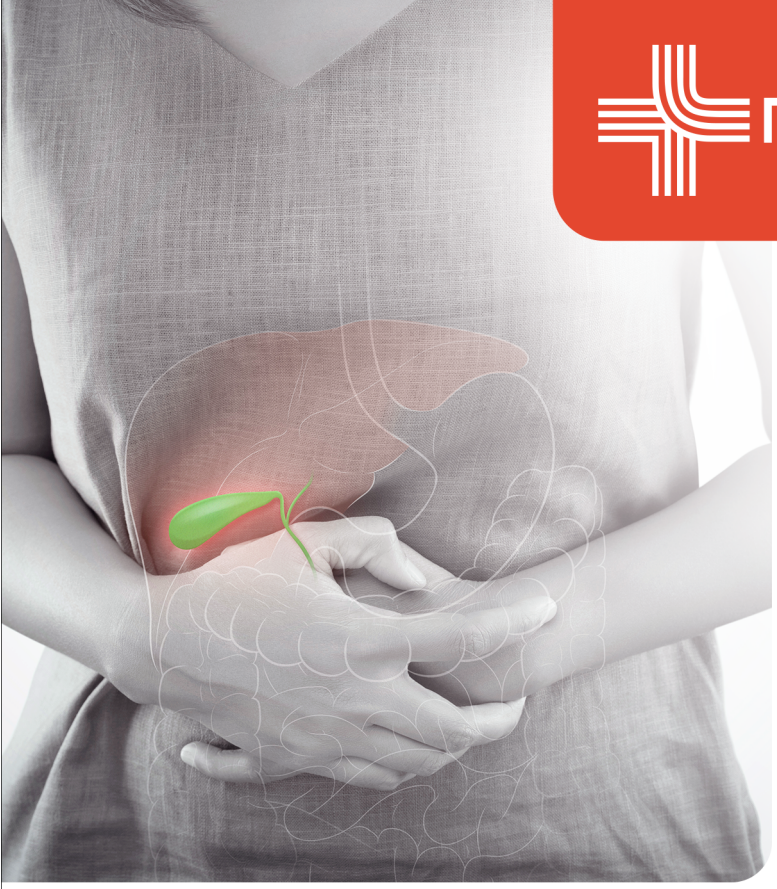

लैप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी

INSTITUTE OF DIGESTIVE AND HEPATOBILIARY SCIENCES

लेप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी क्या है?

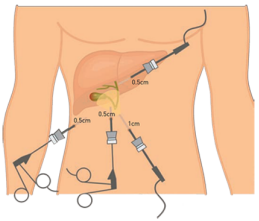

लैपरोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी एक सर्जिकल प्रक्रिया है जिसमें आपके पित्ताशय (गॉलब्लेडर) को निकाला जाता है। सामान्यत: पिताशय की पथरी में इस सर्जरी की सलाह दी जाती है। पित्ताशय एक छोटे नाशपाती के आकार का अंग होता है जो लिवर (यकृत) द्वारा बनाए गए द्रव, पित्त (बाइल) को इकट्ठा करता है। यह बाइल शरीर की पाचन क्रिया में मदद करता है। लैपरोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी में ओपन कोलेसिस्टेक्टोमी की तुलना में छोटा चीरा लगता है।

ओपन कोलेसिस्टेक्टोमी की तुलना में लेप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी क्यों बेहतर है?

लैपरोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी प्रक्रिया के कई लाभ होते हैं, जैसे कि:

- इस प्रक्रिया में रिकवरी ओपन कोलेसिस्टेक्टोमी की तुलना में तेज होती है
- संक्रमण की सम्भावना कम होती है
- मरीज़ को अस्पताल में कम समय के लिए भर्ती रहना पड़ता है
- सर्जरी के बाद होने वाला दर्द इस प्रक्रिया में कम होता है
- मरीज़ जल्द से जल्द अपनी दैनिक दिनचर्या में वापस लौट सकते हैं
- मरीज़ के शरीर पर सर्जरी के निशान कम पड़ते हैं

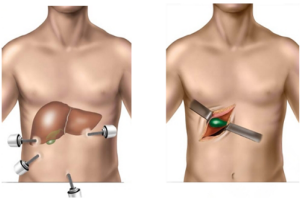

लैपरोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी की आवश्यकता किसे हो सकती है?

यदि मरीज़ को पित्ताशय में पथरी (गॉलस्टोन) के कारण दर्द और संक्रमण है तो डॉक्टर लैपरोस्कोपिक सिस्टेक्टोमी की सलाह दे सकते हैं। गॉलस्टोन्स एक प्रकार के क्रिस्टल्स होते हैं जो पित्ताशय में बनते हैं। ये पित्ताशय से बाइल के प्रवाह को रोक सकते हैं। इसके कारण पित्ताशय में सूजन आ सकती है जिसे कोलेसिस्टाइटिस कहते हैं। गॉलस्टोन्स शरीर के अन्य हिस्सों में जा कर बड़ी समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं।

पित्ताशय में पथरी के कारण मरीज़ निम्नलिखित लक्षण महसूस कर सकते हैं:

- पेट फूलना या ब्लोटिंग
- बुखार
- पीलिया (त्वचा का पीलापन)
- मतली
- पेट के दाहिने भाग में दर्द, जो पीठ या कंधे तक पहुंच सकता है

सर्जरी से पहले क्या प्रक्रिया होती हैं?

लैपरोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी से पहले डॉक्टर कुछ टेस्ट करवाते हैं, जैसे कि:

- पेट का अल्ट्रासाउंड
- खून की जांच
- मूत्र की जांच

चिकित्सक के साथ निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा अवश्य करें:

- शल्यक्रिया के दौरान और बाद में दर्द को नियंत्रित कैसे किया जायेगा
- प्रक्रिया से पहले मरीज़ को कितनी देर कुछ नहीं खाना-पीना होगा

लैपरोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी के दौरान क्या होता है ?

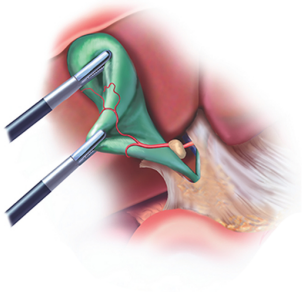

- लैप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी सर्जरी में लगभग एक से दो घंटे का समय लगता है। सबसे पहले मरीज़ को जनरल एनेस्थीसिया दिया जाएगा ताकि प्रक्रिया के दौरान मरीज़ को कोई दर्द न हो।
- सर्जन पेट में छोटे चीरे लगाते हैं । फिर वो उन चीरों के माध्यम से पतली, खोखली नलिकाएँ डालते हैं, जिनसे लेप्रोस्कोप और अन्य सर्जिकल उपकरण को अंदर डाला जाता है। फिर मरीज़ के पेट में सर्जिकल क्षेत्र को फुलाने के लिए कार्बन डाइऑक्साइड पंप की जाती है जिससे सर्जिकल क्षेत्र को आसानी से देखा जा सके।
- उपकरणों की सहायता से सर्जन मरीज़ के पित्ताशय को शरीर के बाकी हिस्सों से अलग करके निकाल देंगे। फिर टांके, सर्जिकल क्लिप या सर्जिकल गोंद के द्वारा इन चीरों को बंद कर दिया जाता है।

लैप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी के बाद क्या होता है?

सर्जरी के बाद मरीज़ को कुछ घंटों तक निगरानी में रखा जाता है। डॉक्टर हृदय,श्वास, रक्तचाप और पेशाब करने की क्षमता की जाँच करेंगे। यदि मरीज़ को कोई समस्या नहीं होती, तो उसी दिन घर जा सकते हैं। लगभग एक सप्ताह के अंदर मरीज़ अपनी दैनिक गतिविधियाँ कर सकते हैं।

डॉक्टर निम्नलिखित सलाह दे सकते हैं:

- भारी सामान उठाने से बचें
- खूब सारा पानी पिएं
- उच्च फाइबर युक्त खाद्य पदार्थ खाएं जिससे क़ब्ज़ी की समस्या न रहे
- अपने घावों की देखभाल करें और निर्देशानुसार दवाएँ लें
- रक्त के थक्कों को बनने से रोकने के लिए प्रतिदिन थोड़ा टहलें

लैप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टोमी के बाद किन परिस्थितियों में डॉक्टर से तुरंत संपर्क करना चाहिए?

यदि मरीज़ निम्न में से कोई भी लक्षण महसूस करें तो तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करें:

- ठंड लगना
- पेट में ऐंठन या तेज़ दर्द
- तेज़ बुखार (101 डिग्री फ़ारेनहाइट से अधिक)
- रक्तस्राव या सूजन
- तीन दिन तक मल त्याग नहीं होना
- उल्टी और मतली
- पीलिया

24/7 सेवा

मेदांता **24X7**
आपातकालीन हेल्पलाइन

1068

अपॉइंटमेंट बुक करने
के लिए स्कैन करें

medanta हेल्पलाइन
890-439-5588
Visit us at : www.medanta.org

मेदांता नेटवर्क: गुरुग्राम । दिल्ली । लखनऊ । पटना । इंदौर । रांची । नोएडा *
शीघ्र प्रारम्भ